



DAWATE-ISLAMI
રિસાલા નંબર : 8



Aaqa Ka Mahina (Gujarati)

صَلَّى اللهُ تَعَالَى
عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

આકા કા મહીના

- શા'બાન કે અકસર રોઝે રખના સુન્નત હૈ 7
- શબે બરાઅત ઓર કબ્રોં કી ઝિયારત 19
- ઇમામે અહલે સુન્નત عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى કા પયામ તમામ મુસલ્માનોં કે નામ 11
- આતશ બાગી કા મૂજિદ કોન ? 20
- સાલ ભર જદૂ સે હિક્કાઝત 19

શેખે તરીકત, અમીરે અહલે સુન્નત, બાનિયે દા'વતે ઇસ્લામી, હઝરતે અલ્લામા મોલાના અબૂ ઝિલાલ

મુહમ્મદ ઇલ્યાસ અઘાર કાહિરી ૨-ઝવી

کتابخانه

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
مَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

किताब पढने की दुआ

अज: शैभे तरीकत, अभीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते ईस्लामी, हजरते अल्लामा

मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद ईलयास अत्तार कादिरि र-जवी دامت بركاتهم العاليه

दीनी किताब या ईस्लामी सबक पढने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ

लीजिये إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा. दुआ येह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तरजमा : ओ अल्लाह! हम पर ईल्मो हिकमत के दरवाजे खोल दे और हम पर अपनी

रहमत नाज़िल फ़रमा ! ओ अ-ज़मत और बुज़ुर्गों वाले ! (المُسْتَعِزُّونَ ج ١ ص ٤٠٤ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आबिर अेक अेक बार दुइइ शरीफ़ पढ लीजिये.

तालिबे गभे मदीना

व बकीअ

व मज्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428



आका का महीना

येह रिसाला (आका का महीना)

शैभे तरीकत, अभीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते ईस्लामी हजरत

अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद ईलयास अत्तार कादिरि र-जवी जिया'ई

دامت بركاتهم العاليه ने उर्दू ज़बान में तहरीर फ़रमाया है.

मजलिसे तराजिम (दा'वते ईस्लामी) ने ईस रिसाले को गुजराती रस्मुल

फत में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाअेअ करवाया

है. ईस में अगर किसी जगह कभी बेशी पाअें तो मजलिसे तराजिम को (ब

जरीअअे मक्तूब, ई-मेईल या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाईये.

राबिता : मजलिसे तराजिम (दा'वते ईस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ डी मस्जिद के सामने,

तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात MO. 9374031409

E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

آका का मदीना

शैतान लाभ सुस्ती दिलाये येह बयान (32 सफ़हात)
मुकम्मल पढ लीजिये عَلَيْهِ إِنَّ شَاءَ اللَّهُ رोजों और एबादते
एलाही के जजबे से मालामाल हो जायेंगे.

आशिके दुरदो सलाम का मकाम

हजरते सय्यिदुना शैब अबू बक शिबली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي ओक
रोज बगदादे मुअल्ला के जय्यिद आलिम हजरते सय्यिदुना अबू बक
बिन मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَاحِد के पास तशरीफ़ लाये, उन्हों ने झौरन पडे
हो कर उन को गले लगा लिया और पेशानी यूम कर बडी ता'जीम के
साथ अपने पास बिठाया. छाजिरीन ने अर्ज किया : या सय्यिदी ! आप
और अहले बगदाद आज तक एन्हें दीवाना कहते रहे हैं मगर आज
एन की एस कदर ता'जीम क्यूं ? जवाब दिया : मैं ने यूं ही औसा नही
किया, أَلْحَمْدُ لِلَّهِ आज रात मैं ने प्वाब में येह एमान अफ़रोज मन्जर
देभा, के हजरते सय्यिदुना अबू बक शिबली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي बारगाहे
لَدَيْهِ

1 : येह बयान अभीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمْ الْعَالِيَةِ ने तप्लीगे कुरआनो सुन्नत की
आलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के आलमी म-दनी मर्कज झैजाने
मदीना बाबुल मदीना करायी में डोने वाले हफ़तावार सुन्नतों बरे एजतिमाअ (26
र-जबुल मुरजजब 1431 सि.हि./8-7-10) में इरमाया था. तरमीम व एजाफ़े के साथ
तहरीरन छाजिरे बिदमत है. -मजलिसे मक-त-बतुल मदीना

﴿فَرَمَانَهُ مُسْتَفْضَاً﴾ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुर्रदे पाक पढा अल्लाह उंस पर दस रकमते नाजिल फरमाता है. (مسلم)

रिसालत में हाजिर हुअे तो सरकारे दो आलम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अरे हो कर उन को सीने से लगा लिया और पेशानी को बोसा दे कर अपने पडलू में बिठा लिया. मैं ने अर्ज की : या रसूलद्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! शिबली पर इस कदर शफकत की वजह ? अल्लाह के मखबूब, दानाअे गुयूब, मुनज़्जलुन अनिल उयूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने (गौब की ખबर देते हुअे) फरमाया के येह हर नमाज के आ'द येह आयत पढता है: لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِّنْ أَنفُسِكُمْ عَزِيزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِينَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿١٢٨﴾ (التوبة ١٢٨) और इस के आ'द मुज पर दुर्रद पढता है. (القول البديع ص ٣٤٦)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

आका का महीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का शा'बानुल मुअज़्जम के बारे में फरमाने मुकर्रम है : سَعْبَانُ شَهْرِيَّ وَرَمَضَانُ شَهْرُ اللَّهِ - या'नी शा'बान मेरा महीना है और र-मजान अल्लाह का महीना है.

(الجامع الصغير للسيوطي ص ٣٠١ حديث ٤٨٨٩)

शा'बान के पांय दुर्र की बहारें

سُبْحَانَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ ! माहे शा'बानुल मुअज़्जम की अ-ज-मतों पर कुरबान ! इस की इज्जलत के लिये एतना ही काफ़ी है के हमारे भीठे भीठे आका मक्की म-दनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने एसे "मेरा महीना" फरमाया. सरकारे गौसे आ'जम शौष अब्दुल कादिर ज़लानी हम्बली के "ش، ع، ب، ا، ن" के पांय दुर्र : "शा'बान" के पांय दुर्र : عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शप्स की नाक भाक आवूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुर्रुदे पाक न पड़े. (त्रुमन्दी)

मु-तअद्लिक नकल इरमाते हैं : **ش** से मुराद “शरफ़” या’नी बुजुर्गी, **ع** से मुराद “उलुव्व” या’नी बुलन्दी, **ب** से मुराद “बिर” या’नी अहसान, **پ** से मुराद “उल्फ़त” और **ن** से मुराद “नूर” है तो येह तमाम यीजें अल्लाह तआला अपने बन्दों को ँस महीने में अता इरमाता है, येह वोह महीना है जिस में नेकियों के दरवाजे खोल दिये जाते हैं, अ-र-कतों का नुजूल होता है, ખतामें मिटा दी जाती हैं और गुनाहों का कफ़ारा अदा किया जाता है, और ખैरुल बरिय्यह, सय्यिदुल वरा जनाभे मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुर्रुदे पाक की कसरत की जाती है और येह नबिय्ये मुप्तार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुर्रुद भेजने का महीना है.

(غُنْبَةُ الطَّالِبِينَ ج ۱ ص ۳۴۱-۳۴۲)

सहाबअे किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ का जज्ज्

उजरते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ इरमाते हैं :

“शा’बान का यांद नजर आते ही सहाबअे किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ तिलावते कुरआने पाक की तरफ़ खूब मु-तवज्ज्जह हो जाते, अपने अम्वाल की जक़ात निकालते ताके गु-रबा व मसाकीन मुसल्मान माहे र-मजान के रोज़ों के लिये तय्यारी कर सकें, हुक्काम कैदियों को तलब कर के जिस पर “हद” (या’नी शर-ई सजा) जारी करना होती उस पर हद काईम करते, अकिय्या में से जिन को मुनासिब होता उन्हें आजाद कर देते, ताजिर अपने कर्जे अदा कर देते, दूसरों से अपने कर्जे वुसूल कर लेते. (यूं माहे र-मजानुल मुबारक से कब्ल ही अपने आप को इरिग कर लेते) और र-मजान शरीफ़ का यांद नजर आते ही गुस्ल कर के (बा’ज उजरात) अे’तिकाइ में बैठ जाते.”

(ايضاً ص ۳۴۱)

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : જો મુઝ પર દસ મરતબા દુરૂદ પાક પઢે અલ્લાહ ﷻ ઉસ પર સો રહમતે નાઝિલ ફરમાતા હૈ. (طبرانی)

મોજૂદા મુસલમાનોં કા જઝબા

سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ ! પહલે કે મુસલમાનોં કો ઈબાદત કા કિસ કદર ઝોક હોતા થા ! મગર અફસોસ ! આજ કલ કે મુસલમાનોં કો ઝિયાદા તર હુસૂલે માલ હી કા શોક હૈ. પહલે કે મ-દની સોચ રખને વાલે મુસલમાન મુ-તબરક અય્યામ (યા'ની બ-ર-કત વાલે દિનોં) મેં રબ્બુલ અનામ ﷻ કી ઝિયાદા સે ઝિયાદા ઈબાદત કર કે ઉસ કા કુર્બ હાસિલ કરને કી કોશિશેં કરતે થે ઓર આજ કલ કે મુસલમાન, મુબારક દિનોં, ખુસૂસન માહે ર-મઝાનુલ મુબારક મેં દુન્યા કી ઝલીલ દૌલત કમાને કી નઈ નઈ તરકીબેં સોચતે હેં. અલ્લાહ ﷻ અપને બન્દોં પર મેહરબાન હો કર નેકિયોં કા અજરો સવાબ ખૂબ બઢા દેતા હૈ, લેકિન દુન્યા કી દૌલત સે મહબ્બત કરને વાલે લોગ ર-મઝાનુલ મુબારક મેં અપની ચીજોં કા ભાવ બઢા કર ગરીબ મુસલમાનોં કી પરેશાનિયોં મેં ઈઝાફા કર દેતે હેં. સદ કરોડ અફસોસ ! ખૈર ખ્વાહિયે મુસ્લિમીન કા જઝબા દમ તોડતા નઝર આ રહા હૈ !

એ ખાસએ ખાસાને રુસુલ વક્તે દુઆ હૈ ઉમ્મત પે તેરી આ કે અજબ વક્ત પડા હૈ
જો દીન બડી શાન સે નિકલા થા વતન સે પરદેસ મેં વોહ આજ ગરીબુલ ગુ-રબા હૈ

ફરિયાદ હૈ એ કશિતયે ઉમ્મત કે નિગહબાં

બેડા યેહ તબાહી કે કરીબ આન લગા હૈ

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَى مُحَمَّدٍ

નફલ રોઝોં કા પસન્દીદા મહીના

મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! હમારે દિલોં કે ચૈન, સરવરે કૌનૈન

مَا هَذَا شَأْنًا يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ عَلَيَّ وَالْأَهْلَ بِسَلَامٍ માહે શા'બાન મેં કસરત સે રોઝે રખના પસન્દ ફરમાતે. યુનાન્યે હઝરતે સચ્ચિદુના અબ્દુલ્લાહ બિન અબી કેસ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ સે

ફરમાને મુસ્તકા صَلَّی اللہُ تَعَالَى عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : جِس کے پاس مہرا لڑکھ ڈوا اور اوس نے موز پر دُر دے پاک ن پدا تہ کی ک
 وول ہد ہ پت لہ گہا. (ابن سنن)

મરવી હે કે ઉન્હોં ને ઉમ્મુલ મુઅમિનીન સચ્ચિ-દતુના આઈશા સિદ્દીકા
 رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا کو ફરમાતે સુના : અમ્બિયા કે સરતાજ, સાહિબે મે'રાજ
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का पसन्दीदा महीना शा'बानुल मुअज़्ज़म था, के
 इस में रोजे रखा करते फिर इसे र-मजानुल मुबारक से मिला देते.

(سُنَنِ ابوداؤد ج ٢ ص ٤٧٦ حديث ٢٤٣١)

लोग इस से गाड़िल हैं

હજરતે સચ્ચિદુના ઉસામા બિન ઝૈદ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ફરમાતે હેં : મેં
 ने अर्ज की : या रसूलदलाह صَلَّی اللہُ تَعَالَى عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं देखता हूँ के जिस
 तरह आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ शा'बान में रोजे रખते हें इस तरह किसी
 भी महीने में नहीं रખते ? फरमाया : रजब और र-मजान के भीय में येह
 महीना है, लोग इस से गाड़िल हें, इस में लोगों के आ'माल अद्लाहु रब्बुल
 आ-लमीन عَزَّوَجَلَّ की तरफ उठाये जाते हें और मुजे येह मडबूष है के मेरा अमल
 इस डाल में उठाया जाये के मैं रोजादार हूँ. (سُنَنِ نَسَائِي ص ٣٨٧ حديث ٢٣٥٤)

मरने वालों की ફેहरिस બનાને का महीना

હજરતે સચ્ચિ-દતુના આઈશા સિદ્દીકા رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ફરમાતી હેં :
 ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पूरे शा'बान के रोजे रखा करते थे.
 ફરમાતી હેં કે મેં ને અર્જ કી : या रसूलदलाह صَلَّی اللہُ تَعَالَى عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या
 सब महीनों में आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के नजदीक जियादा पसन्दीदा
 शा'बान के रोजे रખना है ? तो मडबूषे रब्बुल ઈબાદ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
 ने ईशार्द फरमाया : अद्लाह عَزَّوَجَلَّ इस साल मरने वाली हर जान को लिख
 देता है और मुजे येह पसन्द है के मेरा वक्ते रुफ्सत आये और मैं रोजादार हूँ.

(مُسْنَدُ أَبِي يَفْلَى ج ٤ ص ٢٧٧ حديث ٤٨٩٠)

इरमाने मुस्तक। صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर सुबह व शाम दस दस बार दुरुदे पाक पढा उसे क्रियामत के दिन मेरी शफाअत मिलेगी. (مجمع الزوائد)

आका शा'बान के अक्सर रोजे रખते थे

बुभारी शरीफ में है : उजरते सय्यि-दतुना आ'ईशा सिदीका इरमाती हैं के रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ शा'बान से जियादा किसी महीने में रोजे न रखा करते बल्के पूरे शा'बान ही के रोजे रख लिया करते थे और इरमाया करते : अपनी इस्तिताअत के मुताबिक अमल करो, के अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस वक्त तक अपना इज्जल नही रोकता जब तक तुम उक्ता न जाओ. (صحيح بخاری ج ۱ ص ۶۴۸ حدیث ۱۹۷۰)

हदीसे पाक की शर्ह

शारेहे बुभारी उजरते अल्लामा मुफ्ती मुहम्मद शरीफुल उक अमजदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَرَّةِ इस हदीसे पाक के तह्त लिखते हैं : मुराद येह है के शा'बान में अक्सर दिनों में रोजा रખते थे इसे तग्लीबन (या'नी ग-लबे और जियादत के लिहाज से) कुल (या'नी सारे महीने के रोजे रखने) से ता'बीर कर दिया. जैसे कहते हैं : “इलां ने पूरी रात इबादत की” जब के उस ने रात में जाना भी जाया हो और ज़रूरियात से इरागत भी की हो, यहां तग्लीबन अक्सर को “कुल” कह दिया. मजीद इरमाते हैं : इस हदीस से मा'लूम हुवा के शा'बान में जिसे कुव्वत हो वोह जियादा से जियादा रोजे रખे. अलबत्ता जो कमजोर हो वोह रोजा न रખे क्यूंके इस से र-मजान के रोजों पर असर पड़ेगा, येही महमल (या'नी मुराद व मकसद) है उन अहादीस का जिन में इरमाया गया के निरूफ (या'नी आधे) शा'बान के आ'द रोजा न रખो. (ترمذی حدیث ۷۳۸ [نزهة القاری ج ۳ ص ۳۷۷، ۳۸۰])

दा'वते इस्लामी में रोजों की बहारे

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-अतुल महीना की

करमाने मुस्तकاً صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरुद शरीफ़ न पढा उस ने जफ़ा की. (عبدالرزاق)

मत्बूआ 1548 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, “इंज़ाने सुन्नत (जिल्द अव्वल)” सफ़हा 1379 पर है : हुज्जतुल ईस्लाम हज़रते सय्यिदुना ईमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद गज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي تَعَالَى सफ़हाते हैं : मजकूरा हदीसे पाक में पूरे माहे शा’बानुल मुअज़्ज़म के रोज़ों से मुराद अक्सर शा’बानुल मुअज़्ज़म (या’नी महीने के आधे से ज़ियादा दिनों) के रोज़े हैं. (مُكَاشَفَةُ الْقُلُوبِ ص ۳۰۳) अगर कोई पूरे शा’बानुल मुअज़्ज़म के रोज़े रचना चाहे तो उस को मुमा-न-अत भी नहीं. तब्दीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक, दा’वते ईस्लामी के कर्ष ईस्लामी भाई और ईस्लामी बहनों में र-ज्बुल मुरज्जब और शा’बानुल मुअज़्ज़म दोनों महीनों में रोज़े रचने की तरकीब होती है और मुसल्लस रोज़े रचते हुअे येह हज़रात र-मजानुल मुबारक से मिल जाते हैं.

शा’बान के अक्सर रोज़े रचना सुन्नत है

उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आईशा सिदीका रिवायत इरमाती हैं : हुज़ूरे अकरम, नुरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को मैं ने शा’बान से ज़ियादा किसी महीने में रोज़ा रचते न देखा. आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ सिवाअे यन्द् दिन के पूरे ही माह के रोज़े रचा करते थे. (سُنَنِ تِرْمِذِي ج ۲ ص ۱۸۲ حَدِيث ۷۳۶)

तेरी सुन्नतों पे यल कर मेरी इह ज्ब निकल कर

यले तू गले लगाना म-दनी महीने वाले

(वसाईले बप्शिश (मुरम्म), स. 428)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

इरमाने मुस्तक। صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर रोजे जुमुआ दुरुद शरीफ पढेगा में कियामत के दिन उस की शफाअत करेगा. (جمع الجوامع)

बलाघयों वाली रातें

उम्मुल मुअमिनीन हजरते सय्यि-दतुना आ'शशा सिदीका इरमाती हैं : मैं ने नबिय्ये करीम, रउिकुर'हीम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا को इरमाते सुना : **अद्लाह अज़ज़ल** (भास तौर पर) यार रातों में बलाघयों के दरवाजे खोल देता है : **﴿1﴾** अकर एद की रात **﴿2﴾** एदुल क़ित्र की (यांद्) रात **﴿3﴾** शा'बान की पन्दरहवीं रात, के इस रात में मरने वालों के नाम और लोगों का रिज़क और (इस साल) उज करने वालों के नाम लिखे जाते हैं **﴿4﴾** अ-रके की (या'नी 8 और 9 जुल डिज्जल की दरमियानी) रात अज़ाने (इज्ज) तक.

(تفسير رَدِّ مَنْشُور ج ٧ ص ٤٠٢)

नाज़ुक हैसले

भीठे भीठे ईस्लामी भा'ययो ! पन्दरह शा'बानुल मुअज़्जम की रात कितनी नाज़ुक है ! न जाने किस की क़िस्मत में क्या लिख दिया जाये ! बा'ज अवकात बन्द गइलत में पडा रह जाता है और उस के बारे में कुदु का कुदु डो युका डोता है. "गुन्यतुनालिबीन" में है : बहुत से क़फ़न धुल कर तय्यार रभे डोते हैं मगर क़फ़न पहनने वाले बाज़ारों में घूम फिर रहे डोते हैं, काफ़ी लोग ऐसे डोते हैं के उन की क़भ्रें खोदी जा युकी डोती हैं मगर उन में दफ़न डोने वाले ખुशियों में मस्त डोते हैं, बा'ज लोग हंस रहे डोते हैं डालां के उन की मौत का वक्त करीब आ युका डोता है. क'ई मकानात की ता'भीरात का काम पूरा डो गया डोता है मगर साथ ही उन के मालिकान की जिन्दगी का वक्त भी पूरा डो युका डोता है.

(عُنَيْتَةُ الطَّالِبِينَ ج ١ ص ٣٤٨)

आगाह अपनी मौत से को'ई बशर नहीं

सामान सो बरस का है पल की खबर नहीं

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

इरमाने मुस्तक। عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्रह पाक न पढा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया. (طبرانی)

देरों गुनाहगारों की मग्फिरत होती है मगर...

हजरते सय्यिदुना आ'ईशा सिदीका رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से रिवायत है, हुजूर सरापा नूर, हैज गन्जूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया : मेरे पास जिब्रि'एल (عَلَيْهِ السَّلَام) आये और कहा : शा'बान की पन्दरहवीं रात है, इस में अल्लाह तआला जहन्नम से इतनों को आजाद इरमाता है जितने बनी कलम की बकरियों के बाल हैं मगर काफिर और अदावत वाले और रिश्ता काटने वाले और कपडा लटकाने वाले और वालिदैन की ना इरमानी करने वाले और शराब के आदी की तरफ नजरे रहमत नहीं इरमाता. (شُعَبُ الْإِيمَان ج ٣ ص ٢٨٤ حديث ٢٨٢٧) (इदीसे पाक में "कपडा लटकाने वाले" का ज़ो बयान है, इस से मुराद वोह लोग हैं ज़ो तकब्बुर के साथ टप्नों के नीचे तहबन्द या पाजमा या सौब या'नी लम्बा कुरता वगैरा लटकाते हैं) करोड़ों हम्बलियों के अजीम पेशवा हजरते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने हजरते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने अब्र रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से ज़ो रिवायत नकल की उस में कातिल का भी जिक्र है.

(مُسْنَدُ إِمَامِ أَحْمَد ج ٢ ص ٥٨٩ حديث ١٦٦٠٣)

हजरते सय्यिदुना कसीर बिन मुर्रह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है के ताजदारे रिसालत, सरापा रहमत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ शा'बान की पन्दरहवीं शब में तमाम जमीन वालों को बप्श देता है सिवाये मुशरिक और अदावत वाले के.

(شُعَبُ الْإِيمَان ج ٣ ص ٢٨١ حديث ٢٨٣٠)

हजरते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की दुआ

अमीरुल मुअमिनीन हजरते मौला मुशिकल कुशा, सय्यिदुना अलियुल मुर्तजा शेरे षुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ शा'बानुल मुअज़्जम की

﴿فَرَمَانَهُ مُسْتَقِيمًا﴾ : صَلَّيْ اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْكَ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर दुइटे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुज पर दुइटे पाक पढना तुम्हारे लिये पाकीजगी का बाईस है. (ابو يعلى)

पन्दरहवीं रात या'नी शबे बराअत में अक्सर बाहर तशरीफ़ लाते. अेक बार ईसी तरह शबे बराअत में बाहर तशरीफ़ लाये और आस्मान की तरफ़ नज़र उठा कर इरमाया : अेक मर्तबा अल्लाह तआला के नबी उतरते सय्यिदुना दावूद عَلَي نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने शा'बान की पन्दरहवीं रात आस्मान की तरफ़ निगाह उठाई और इरमाया : येह वोह वक्त है के ईस वक्त में जिस शप्स ने जो ली दुआ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मांगी उस की दुआ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने कबूल इरमाई और जिस ने मग़ि़रत तलब की अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस की मग़ि़रत इरमा दी बशर्ते के दुआ करने वाला उश्शार (या'नी जुल्मन टेक्स लेने वाला), जादूगर, काहिन और बाजा बजाने वाला न हो, इर येह दुआ की : **اللَّهُمَّ رَبَّ دَاوُدَ اغْفِرْ لِمَنْ دَعَاكَ فِيْ -**
اللَّيْلَةِ أَوْ اسْتَغْفَرَكَ فِيْهَا - या'नी अै अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! अै दावूद के परवर दगार ! जो ईस रात में तुज से दुआ करे या मग़ि़रत तलब करे तू उस को अप्श दे.
(لطائف التعارف لابن رجب الحنبلى ج ١ ص ١٣٧ باختصار)

उर अता तू दर गुजर कर बे कसो मजबूर की

हो ईलाही ! मग़ि़रत उर बे कसो मजबूर की

(वसाईले बज्शिश (मुरम्म), स. 96)

صَلُّوْا عَلَي الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَي مُحَمَّدٍ

मह़रम लोग

भीठे भीठे ईस्लामी ल्माईयो ! शबे बराअत बेहद अहम रात है, किसी सूरत से ली ईसे गइलत में न गुजारा जाये, ईस रात रहमतों की पूब बरसात होती है. ईस मुबारक शब में अल्लाह तआ-र-क व तआला “अनी कलब” की बकरियों के बालों से ली ज़ियादा लोगों को

﴿فَرَمَانَهُ مُسْتَكْفًا صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ﴾ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोड़ मुज पर दुइद शरीक न पढे तो वोड़ लोगों में से कन्जूस तरीन शप्स है. (مسند احمد)

जहन्नम से आजाद इरमाता है. क़िताबों में लिखा है : “कबीलअे बनी क्लब” कबाईले अरब में सब से ज़ियादा बकरियां पालता था.¹ आह ! कुछ बढ नसीब जैसे ली हैं जिन पर शबे बराअत या’नी छुटकारा पाने की रात ली न बप्शे जाने की वईद है. डउरते सय्यिदुना ईमाम बैहकी शाक़े ई **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَبِيرِ** “इजाईलुल अवकात” में नकल करते हैं : रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** का इरमाने ईब्रत निशान है : छ⁶ आदमियों की ईस रात ली बप्शिश नईी डोगी : ﴿1﴾ शराब का आदी ﴿2﴾ मां बाप का ना इरमान ﴿3﴾ जिना का आदी ﴿4﴾ कन्वे तअल्लुक करने वाला ﴿5﴾ तस्वीर बनाने वाला और ﴿6﴾ युगल पोर. (فضائل الأوقات ج ١ ص ١٣٠ حدیث ٢٧)

ईसी तरह काहिन, जहदूगर, तकब्बुर के साथ पाजामा या तहबन्द टप्नों के नीचे लटकाने वाले और किसी मुसल्मान से बिला ईज्जते शर-ई बुग्जो कीना रपने वाले पर ली ईस रात मग़िरेत की सआदत से महइमी की वईद है, युनाच्चे तमाम मुसल्मानों को याहिये के मु-तज्करा (या’नी बयान कदा) गुनाहों में से अगर **مَعَادُ اللَّهِ** किसी गुनाह में मुलव्वस डों तो वोड़ बिल फुसूस उस गुनाह से और बिल उमूम डर गुनाह से शबे बराअत के आने से पडले बडके आज और अलमी सय्यी तौबा कर लें, और अगर बन्दों की डक त-लइियां की हैं तो तौबा के साथ साथ उन की मुआई तलाई की तरकीब इरमा लें.

इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का पयाम

तमाम मुसल्मानों के नाम

मेरे आका आ’ला डउरत, ईमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने’मत,

له دینہ

ل:مرقاة ج ٣ ص ٣٧٥

करमाने मुस्तफ़ी. عَلَّمَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْنَا وَعَلَيْكُمْ وَالْبِرَّ وَتَسْمَعُ : तुम जहां भी हो मुज पर दुरद पढो, के तुम्हारा दुरद मुज तक पछोयता है. (طبرانی)

अजीमुल ब-र-कत, अजीमुल मर्तबत, परवानअे शम्मे रिसालत, मुजद्विदे दीनो मिल्लत, ढामिये सुन्नत, माहिये बिद्अत, पीरे तरीकत, बाँसे भैरो ब-र-कत, उ-नई मजलब के अजीम आलिम व मुफ़्ती हजरते अल्लामा मौलाना अलहाज अल हाफ़िज अल कारी शाह एमाम अहमद रजा भान عَلِيِّرَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने अपने अेक एरादत मन्द (या'नी मो'तकिद) को शबे बराअत से कबल तौबा और मुआफ़ी तलाफ़ी के तअल्लुक से अेक मकतूब शरीफ़ एरसाल इरमाया जे के उस की एफ़ादियत के पेशे नजर हाजिरे बिदमत है युनान्हे “कुल्लियाते मकतीबे रजा” जिल्द अव्वल सफ़हा 356 ता 357 पर है : शबे बराअत करीब है, एस रात तमाम बन्दों के आ'माल हजरते एज़्जत में पेश होते हैं. मौला عَزَّوَجَلَّ ब तुफ़ैले हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेअे यौमुन्नुशूर عَلَيْهِ أَفْضَلُ الصَّلَاةِ وَالتَّسْلِيمِ मुसल्मानों के जुनूब (या'नी गुनाह) मुआफ़ इरमाता है मगर यन्द उन में वोह दो मुसल्मान जे बाहम हुन्वी वजह से रन्जिश रभते हैं, इरमाता है : “एन को रहने दो, जब तक आपस में सुल्ल न कर लें.” लिहाजा अहले सुन्नत को याहिये के हत्तल वस्अ कबले गुइबे आइताब 14 शा'भान बाहम अेक दूसरे से सफ़ाई कर लें, अेक दूसरे के हुकूक अदा कर दें या मुआफ़ करा लें, के बि एज़्जिनीही तआला हुकूकुल एबाद से सहाईफ़े आ'माल (या'नी आ'माल नामे) ખाली हो कर बारगाहे एज़्जत में पेश हों. हुकूके मौला तआला के लिये तौबअे सादिका (या'नी सख्खी तौबा) काफ़ी है. (हदीसे पाक में है :) الْكَاتِبُ مِنَ الذَّنْبِ كَمَنْ لَا ذَنْبَ لَهُ (या'नी गुनाह से तौबा करने वाला अैसा है जैसे उस ने गुनाह किया ही नहीं (ابن ماجه حديث 4200)) अैसी हालत में बि एज़्जिनीही तआला उइर एस शब में उम्मीदे मग्दिरते ताम्मा (या'नी मग्दिरत की पक्की उम्मीद) है बशर्ते सिइलते अकीदा. (या'नी अकीदा दुरुस्त होना शर्त

﴿فَرْمَانَهُ مُسْتَكْفًا﴾ : صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जो लोग अपनी मजलिस से अद्वलाह के जिक्र और नबी पर दुउद शरीफ़ पढ़े बिगैर उठ गये तो वोह बढबुदर मुदरि से उठे. (شعب الایمان)

है) (और वोह गुनाह मिटाने वाला रहमत फ़रमाने वाला है). येह सब मुसा-ल-हते एष्वान (या'नी त्वाँयों में सुल्ह करवाना) व मुआफ़िये हुकूक़ **بِحَمْدِهِ تَعَالَى** यहाँ सालहाअे दर्राज (या'नी काफ़ी बरसों) से ज़ारी है, उम्मीद है के आप भी वहाँ के मुसल्मानों में एस का एजरा कर के **مَنْ سَنَّ فِي الْإِسْلَامِ سُنَّةً حَسَنَةً فَلَهُ أَجْرُهَا وَأَجْرُ مَنْ عَمِلَ بِهَا إِلَى يَوْمِ الْقِيَمَةِ لَا يَنْقُصُ مِنْ أُجُورِهِمْ شَيْءٌ** (या'नी जो एस्लाम में अच्छी राह निकाले उस के लिये एस का सवाब है और कियामत तक जो एस पर अमल करें उन सब का सवाब हमेशा उस के नामअे आ'माल में लिखा जाअे बिगैर एस के, के उन के सवाबों में कुछ कमी आअे) के मिस्दाक हों और एस फ़कीर के लिये अफ़वो आफ़ियते दारैन की दुआ फ़रमाअें. फ़कीर आप के लिये दुआ करता है और करेगा. सब मुसल्मानों को समजा दिया जाअे के वहाँ (या'नी बारगाहे एलाही में) न ખाली ज़बान देખी जाती है न निफ़ाक पसन्द है, सुल्ह व मुआफ़ी सब सख्ये दिल् से डो. वस्सलाम

अज : **عَفِي عَنَّا** रजा कादिरी अहमद फ़कीर

पन्दरह शा'बान का रोज़ा

उजरते सख्येदुना अलिय्युल मुर्तजा शेरे षुदा **كَبَّرَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ** से भरवी है के नबिय्ये करीम, रउफ़ुर्रहीम **عَلَيْهِ أَفْضَلُ الصَّلَاةِ وَالسَّلَامِ** का फ़रमाने अजीम है : जब पन्दरह शा'बान की रात आअे तो उस में कियाम (या'नी एबादत) करो और दिन में रोज़ा रખो. बेशक अद्वलाह तआला गुउुबे आफ़ताब से आस्माने दुन्या पर ખास तजद्वली फ़रमाता और कहता है : "है कोँ मुज से मग्फ़िरत तलब करने वाला, के उसे बषश दूं ! है कोँ रोज़ी तलब करने वाला, के उसे रोज़ी दूं ! है कोँ मुसीबत ज़दा, के उसे आफ़ियत अता करूं ! है कोँ अैसा !

ફરમાને મુસ્તકા : صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : જિસ ને મુઝ પર રોઝે જુમુઆ દો સો બાર દુરુદે પાક પઢા ઉસ કે દો સો સાલ કે ગુનાહ મુઆફ હોંગે. (جمع الجوامع)

હે કોઈ ઐસા ! ઔર યેહ ઉસ વક્ત તક ફરમાતા હૈ કે ફજ તુલૂઅ હો જાએ.”

(سُنَنِ ابْنِ مَاجَه ج ٢ ص ١٦٠ حدیث ١٣٨٨)

ફાએદે કી બાત

શબે બરાઅત મેં આ'માલ નામે તબ્દીલ હોતે હેં લિહાઝા મુસ્કિન હો તો 14 શા'બાનુલ મુઅઝ્ઝમ કો ભી રોઝા રખ લિયા જાએ તાકે આ'માલ નામે કે આખિરી દિન મેં ભી રોઝા હો. 14 શા'બાન કો અસ્ર કી નમાઝ બા જમાઅત પઢ કર વહીં નફલ એ'તિકાફ કર લિયા જાએ ઔર નમાઝે મગરિબ કે ઇન્તિઝાર કી નિયત સે મસ્જિદ હી મેં ઠહરા જાએ તાકે આ'માલ નામા તબ્દીલ હોને કે આખિરી લખ્ડાત મેં મસ્જિદ કી હાઝિરી, એ'તિકાફ ઔર ઇન્તિઝારે નમાઝ વગેરા કા સવાબ લિખા જાએ. બલ્કે ઝહે નસીબ ! સારી હી રાત ઇબાદત મેં ગુઝારી જાએ.

સબ્ઝ પરયા

અમીરુલ મુઅમિનીન હઝરતે સય્યિદુના ઉમર બિન અબ્દુલ અઝીઝ રઝી اللهُ تَعَالَى عَنْهُ એક મર્તબા શા'બાનુલ મુઅઝ્ઝમ કી પન્દરહવીં રાત યા'ની શબે બરાઅત ઇબાદત મેં મસરૂફ થે. સર ઉઠાયા તો એક “સબ્ઝ પરયા” મિલા જિસ કા નૂર આસ્માન તક ફેલા હુવા થા, ઉસ પર લિખા થા, “هَذِهِ بَرَاءَةٌ مِّنَ النَّارِ مِنَ الْمَلِكِ الْعَزِيزِ لِعَبْدِهِ عُمَرَ بْنِ عَبْدِ الْعَزِيزِ” યા'ની ખુદાએ માલિકો ગાલિબ કી તરફ સે યેહ “જહન્નમ કી આગ સે આઝાદી કા પરવાના” હૈ જો ઉસ કે બન્દે ઉમર બિન અબ્દુલ અઝીઝ કો અતા હુવા હૈ.

(تفسير رُوح البَيَان ج ٨ ص ٤٠٢)

سُبْحَانَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ ! મીઠે મીઠે ઇસ્લામી ભાઈયો ! ઇસ હિકાયત મેં જહાં અમીરુલ મુઅમિનીન સય્યિદુના ઉમર બિન અબ્દુલ અઝીઝ

इरमाने मुस्तक। صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर दुरद शरीफ पढो, अल्लाह عُزَّوَجَلَّ तुम पर रहमत भेजेगा. (ابن عدی)

رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की अ-उ-मतो इजीलत का इजहार है वही शबे बराअत की रिफअतो शराफत का भी जुलूर है. كَرَّمَ اللهُ وَجْهَهُ येह मुबारक शब जहन्नम की लउकती आग से बराअत (या'नी छुटकारा) पाने की रात है, इसी लिये इस रात को "शबे बराअत" कहा जाता है.

मगरिब के बा'द ९^० नवाइल

मा'भूलाते औलियाअे किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام से है के मगरिब के इर्र व सुन्नत वगैरा के बा'द ९^० रकअत नइल दो दो रकअत कर के अदा किये जाअें. पहली दो रकअतों से पहले येह नियत कीजिये : "या अल्लाह عُزَّوَجَلَّ ! इन दो रकअतों की ब-र-कत से मुजे दराजिये उम्र बिलभैर अता इरमा." दूसरी दो रकअतों में येह नियत इरमाइये : "या अल्लाह عُزَّوَجَلَّ ! इन दो रकअतों की ब-र-कत से बलाओं से मेरी डिफाजत इरमा." तीसरी दो रकअतों के लिये येह नियत कीजिये : "या अल्लाह عُزَّوَجَلَّ ! इन दो रकअतों की ब-र-कत से मुजे अपने सिवा किसी का मोहताज न कर." इन 6 रकअतों में सू-रतुल इतिहा के बा'द जो याहें वोह सूरतें पढ सकते हैं, याहें तो हर रकअत में सू-रतुल इतिहा के बा'द तीन तीन बार सू-रतुल इफ्वास पढ लीजिये. हर दो रकअत के बा'द इक्कीस बार قُلْ هُوَ اللهُ أَحَد (पूरी सूरत) या अेक बार सूअे यासीन शरीफ पढिये बढे हो सके तो दोनों ही पढ लीजिये. येह भी हो सकता है के कोई अेक इस्लामी लार्थ बुलन्द आवाज से यासीन शरीफ पढें और दूसरे जामोशी से भूब कान लगा कर सुनें. इस में येह जयाल रहे के सुनने वाला इस दौरान जबान से यासीन शरीफ बढे कुछ भी न पढे और येह मस्अला भूब याद रभिये के जब कुरआने करीम बुलन्द आवाज से पढा जाअे तो

इरमाने मुस्तक। عَسَلُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर कसरत से दुरुदे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज पर दुरुदे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के विये मङ्कित है. (ابن عساکر)

जो लोग सुनने के विये डाक़िर हैं उन पर इर्जे औन है के युपयाप भूब कान लगा कर सुनें. إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ रात शुइअ छोते ही सवाब का अम्भार लग जायेगा. हर बार यासीन शरीफ़ के बा'द “दुआये निस्के शा'बान” ली पढिये.

दुआये निस्के शा'बानुल मुअर्रम

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
 اَللّٰهُمَّ يَا ذَا الْمَنِّ وَلَا يَمِنُ عَلَيْهِ ط يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ ط
 يَا ذَا الطَّوْلِ وَالْاِنْعَامِ ط لَا اِلَهَ اِلَّا اَنْتَ ط ظَهَرَ الْاَلَجِيْنَ ط وَجَارُ
 الْمُسْتَجِيْرِيْنَ ط وَاَمَانُ الْخَائِفِيْنَ ط اَللّٰهُمَّ اِنْ كُنْتَ كَتَبْتَنِيْ
 عِنْدَكَ فِيْ اَمْرِ الْكِتٰبِ شَقِيًّا اَوْ مَحْرُوْمًا اَوْ مُطْرُوْدًا اَوْ مُقْتَرًّا
 عَلٰى فِي الرِّزْقِ فَاَمْحُ اَللّٰهُمَّ بِفَضْلِكَ شَقَاوَتِيْ وَحِرْمَانِيْ
 وَطَرْدِيْ وَاَقْتَارِ رِزْقِيْ ط وَاثْبِتْنِيْ عِنْدَكَ فِيْ اَمْرِ الْكِتٰبِ
 سَعِيْدًا اَمْرًا رُوقًا مُّوَفَّقًا لِلْخَيْرَاتِ ط فَاِنَّكَ قُلْتَ
 وَقَوْلِكَ الْحَقُّ فِيْ كِتَابِكَ الْمُنَزَّلِ ط عَلٰى لِسَانِ نَبِيِّكَ
 الْمُرْسَلِ ط ﴿يَسْأَلُوْا اللّٰهَ مَا يَشَاءُ وَيُثَبِّتُ ۗ وَعِنْدَهُ

इरमाने मुस्तक। صلى الله تعالى عليهم وسلم : जिस ने किताब में मुज पर दुर्रुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा किरिशते उस के लिये छस्तिगफार (या'नी बफिशश की दुआ) करते रहेंगे. (طبرانی)

أُمُّ الْكِتَابِ ۞ إِلَهِي بِالتَّجَلِّي الْأَعْظَمِ فِي لَيْلَةِ النَّصْفِ
 مِنْ شَهْرِ شَعْبَانَ الْمُكْرَمِ ۞ الَّتِي يُفْرَقُ فِيهَا كُلُّ
 أَمْرٍ حَكِيمٍ ۞ وَيُبْرَمُ ۞ أَنْ تَكْشِفَ عَنَّا مِنَ الْبَلَاءِ
 وَالْبُلُوَاءِ مَا نَعْلَمُ وَمَا لَا نَعْلَمُ ۞ وَأَنْتَ بِهِ أَعْلَمُ ۞ إِنَّكَ
 أَنْتَ الْأَعَزُّ الْأَكْرَمُ ۞ وَصَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ
 وَعَلَى آلِهِ وَأَصْحَابِهِ وَسَلَّمَ ۞ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۞

तरजमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! ऐ अहसान करने वाले, के जिस पर अहसान नहीं किया जाता ! ऐ बडी शानो शौकत वाले ! ऐ इजलो छन्आम वाले ! तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं. तू परेशान डालों का मददगार, पनाह मांगने वालों को पनाह और भौंइजदों को अमान देने वाला है. ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! अगर तू अपने यहाँ उम्मुल किताब (या'नी लौहे मडइज) में मुजे शकी (या'नी बद बप्त), मडइम, धुतकारा हुवा और रिज्क में तंगी दिया हुवा लिख चुका हो तो ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! अपने इज्जल से मेरी बद बप्ती, मडइमी, जिद्वलत और रिज्क की तंगी को मिटा दे और अपने पास उम्मुल किताब में मुजे भुश बप्त, (कुशाद) रिज्क दिया हुवा और बलाइयों की तौफीक दिया हुवा सप्त (तहरीर) इरमा दे, के तू ने ही तेरी नाजिल की हुई किताब में तेरे ही भेजे हुअे नबी صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ज्बाने कैज तरजुमान पर इरमाया और तेरा (येह) دِينَهُ

﴿فَرْمَانَهُ مُسْتَقِيمًا﴾ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरुद पाक पढा अल्लाह उस पर दस रकमते नाज़िल करमाता है. (مسلم)

इरमाना हक है : “तर-ज-मअे क-जुल ईमान : अल्लाह जो याहे मिटाता है और साबित करता है और अस्ल लिखा हुवा उसी के पास है।¹” जुदाया عَزَّوَجَلَّ ! तजल्लिये आ'उम के वसीले से जो निस्के शा'बानुल मुकर्रम की रात (या'नी शबे बराअत) में है, के जिस में बांट दिया जाता है हर हिकमत वाला काम और अटल कर दिया जाता है. (या अल्लाह!) आइतों को हम से दूर इरमा, के जिन्हें हम जानते और नहीं भी जानते जब के तू उन्हें सब से जियादा जानने वाला है. बेशक तू सब से बढ कर अजीज और ईज्जत वाला है. अल्लाह तआला हमारे सरदार मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर और आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के आल व अस्हाब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ पर दुरुदो सलाम भेजे. सब भूबियां सब जहानों के पालने वाले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं.

सगे मदीना عَفَى عَنْهُ की म-दनी छल्लिजामें

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ ! सगे मदीना عَفَى عَنْهُ का सालहा साल से शबे बराअत में बयान कर्दा तरीके के मुताबिक छ⁶ नवाइल व तिलावत वगैरा का मा'मूल है. मगरिब के बा'द की जाने वाली येह ईबादत नइल है, इर्ज व वाजिब नहीं और नमाजे मगरिब के बा'द नवाइल व तिलावत की शरीअत में कहीं मुमा-न-अत भी नहीं. उजरते अल्लामा ईब्ने रजब हम्बली عَفَى رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي लिखते हैं : अहले शाम में से जलीलुल कद्र ताबिईन म-सलन उजरते सय्यिहुना खालिद बिन मा'दान, उजरते सय्यिहुना मकहूल, उजरते सय्यिहुना लुक्मान बिन आभिर رَحِمَهُ اللهُ تَعَالَى वगैरा शबे बराअत की बहुत ता'जीम करते थे और ईस में भूब ईबादत बजा लाते, ईन्ही से दीगर मुसल्मानों ने ईस मुबारक रात की ता'जीम सीपी. (لطائف المعارف ١ ص ١٤٥)

دينه

ل: ١٣، العدد ٣٩

﴿فَرَمَانَهُ مُسْتَضْفًا﴾ : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शप्स की नाक पाक आवूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुरेदे पाक पडे. (ترمذی)

“दुरे मुप्तार” में है : शबे बराअत में शब बेदारी (कर के ईबादत) करना मुस्तहब है, (पूरी रात जागना ही शब बेदारी नहीं) अक्सर हिस्से में जागना भी शब बेदारी है. (مُؤْتَمَرَاتُ حَجْرَاتِ ۲ ص ۶۸-۶۷, बदरे शरीअत, जि. 1, स. 679) म-दनी ईस्तिजा : मुम्किन हो तो तमाम ईस्लामी त्माई अपनी अपनी मसाजिद में बा’दे मगरिब ७⁶ नवाझिल वगैरा का अहतिमाम इरमाअें और देरों सवाब कमाअें. ईस्लामी बहनें अपने अपने घर में येह आ’माल बजा लाअें.

साल भर जादू से हिंदात

दा’वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 166 सफ़हात पर मुशतमिल किताब, “ईस्लामी जिन्दगी” सफ़हा 135 पर है : अगर ईस रात (या’नी शबे बराअत) सात पत्ते बेरी (या’नी बेर के दरप्त) के पानी में जोश दे कर (जब पानी नहाने के काबिल हो जाओ तो) गुस्ल करे لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ तमाम साल जादू के असर से महकूत रहेगा.

शबे बराअत और कब्रों की ठियारत

उम्मुल मुअमिनीन हजरते सय्यि-दतुना आईशा सिदीका رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا इरमाती हैं : मैं ने अक रात सरवरे काअेनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को न देया तो बकीअे पाक में मुजे मिल गअे, आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मुज से इरमाया : क्या तुम्हें ईस बात का उर था के अद्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ तुम्हारी हक त-लफ़ी करेंगे ? मैं ने अर्ज की : या रसूलद्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! मैं ने ખयाल किया था के शायद आप अज़्वाजे मुतहूदरात में से किसी के पास तशरीफ़ ले गअे होंगे. तो इरमाया : “बेशक अद्लाह तआला शा’बान की पन्दरहवीं रात आस्माने दुन्या पर तजल्ली इरमाता है, पस कबीलअे बनी कलब की बकरियों

﴿فَرَمَانَهُ مُسْتَقْفًا﴾ عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : જો મુઝ પર દસ મરતબા દુરૂદે પાક પઢે અલ્લાહ ઉસ પર સો રહમતે નાઝિલ ફરમાતા હૈ. (طبرانی)

કે બાલોં સે ભી ઝિયાદા ગુનહગારોં કો બખ્શ દેતા હૈ.”

(سُنَنِ تِرْمِذِي ج ٢ ص ١٨٣ حَدِيث ٧٣٩)

આતશ બાઝી કા મૂજિદ કૌન ?

મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! الْحَبْدُ لِلَّهِ ﷻ શબે બરાઅત જહન્નમ કી આગ સે “બરાઅત” યા’ની છુટકારા પાને કી રાત હૈ, મગર સદ્ કરોડ અફસોસ ! મુસલમાનોં કી એક તા’દાદ આગ સે છુટકારા હાસિલ કરને કે બજાએ ખુદ પૈસે ખર્ચ કર કે અપને લિયે આગ યા’ની આતશ બાઝી કા સામાન ખરીદતી ઔર ખૂબ પટાખે વગૈરા છોડ કર ઈસ મુકદ્દસ રાત કા તકદુસ પામાલ કરતી હૈ. મુફ્ફિરે શહીર હકીમુલ ઉમ્મત હઝરતે મુફ્તી અહમદ યાર ખાન عَلِيَّهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰنِ અપની મુખ્તસર કિતાબ “ઈસ્લામી ઝિન્દગી” મેં ફરમાતે હૈં : “ઈસ રાત કો ગુનાહ મેં ગુઝારના બડી મહરૂમી કી બાત હૈ આતશ બાઝી કે મુ-તઅલ્લિક મશહૂર યેહ હૈ કે યેહ નમરૂદ બાદશાહ ને ઈજાદ કી જબ કે ઈસ ને હઝરતે સચ્ચિદુના ઈબ્રાહીમ ખલીલુલ્લાહ عَلِيَّهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰنِ કો આગ મેં ડાલા ઔર આગ ગુલઝાર હો ગઈ તો ઉસ કે આદમિયોં ને આગ કે અનાર ભર કર ઉન મેં આગ લગા કર હઝરતે સચ્ચિદુના ઈબ્રાહીમ ખલીલુલ્લાહ عَلِيَّهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰنِ કી તરફ ફેંકે.”

(ઈસ્લામી ઝિન્દગી, સ. 76)

શબે બરાઅત કી મુરવ્વજા આતશ બાઝી હરામ હૈ

અફસોસ ! શબે બરાઅત મેં “આતશ બાઝી” કી નાપાક રસ્મ અબ મુસલમાનોં કે અન્દર ઝોર પકડતી જા રહી હૈ. “ઈસ્લામી ઝિન્દગી” મેં હૈ : મુસલમાનોં કા લાખોં રુપિયા સાલાના ઈસ રસ્મ મેં બરબાદ હો જાતા હૈ ઔર હર સાલ ખબરેં આતી હૈં કે ફુલાં જગહ સે ઈતને ઘર આતશ બાઝી સે જલ ગએ ઔર ઈતને આદમી જલ કર મર ગએ. ઈસ

इरमाने मुस्तफ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ठिक़ हुवा और उस ने मुज पर दुरदे पाक न पढा तहकीक़ वोल भद भप्त हो गया. (ابن سنی)

में जान का पतरा, माल की बरबादी और मकानों में आग लगने का अन्देशा है, (नीज़) अपने माल में अपने हाथ से आग लगाना और फिर फुदा तआला की ना इरमानी का वबाल सर पर डालना है, फुदा كُرْبَعًا के लिये इस बेहूदा और इराम काम से बयो, अपने बय्यों और कराबत दारों को रोकी, जहां आवारा बय्ये येह भेल भेल रहे हों वहां तमाशा देभने के लिये ली न जाओ. (अज़न) (शभे बराअत की मुरव्वज) आतश बाजी का छोडना बिवा शक इसराफ़ और हुज़ूल पर्यी है लिहाजा इस का ना जाईज व इराम होना और इसी तरह आतश बाजी का बनाना और बेयना परीदना सब शरअन मम्नूअ हैं. (इतावा अजमलिय्या, जि. 4, स. 52) मेरे आका आ'ला हजरत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रजा पान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن इरमाते हैं : आतश बाजी जिस तरह शादियों और शभे बराअत में राईज है बेशक इराम और पूरा जुर्म है के इस में तज़्यीअे माल (या'नी माल का जाअेअ करना) है.

(इतावा र-अविय्या, जि. 23, स. 279)

आतश बाजी की जघन सूरते

शभे बराअत में जो आतश बाजी छोडी जाती है उस का मकसद भेलकूद और तफ़रीह होता है लिहाजा येह गुनाह व इराम और जहन्म में ले जाने वाला काम है. अलबत्ता इस की बा'ज जाईज सूरते ली हैं जैसा के बारगाहे आ'ला हजरत رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ में सुवाल हुवा : क्या इरमाते हैं उ-लमाअे दीन इस मस्अले में के आतश बाजी बनाना और छोडना इराम है या नही? अल जवाब : मम्नूअ व गुनाह है मगर जो सूरते भास्सा लहुवो लईव व तब्ज़ीर व इसराफ़ से पाली हो (या'नी उन मप्सूस सूरतों में जाईज है जो भेलकूद और हुज़ूल पर्यी से पाली हो), जैसे अे'लाने डिवाल (या'नी यांद नज़र आने का अे'लान) या जंगल में या

﴿इरमाने मुस्तक﴾ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर सुबह व शाम दस दस बार दुर-दुरे पाक पढा उसे डियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिल कर रहेगी. (مجمع الزوائد)

वक्ते छाजत शहर में ली दफ़्ते ज़ानवराने मूज़ी (या'नी ईजा देने वाले ज़ानवरों को भगाने के लिये) या भेत या मेवे के दरप्टों से ज़ानवरों (और परिन्दों) के भगाने उडाने को नाडियां, पटाभे, तूमडियां छोडना.

(इतावा र-अविय्या, जि. 23, स. 290)

तुज को शा'बाने मुअज़्ज़म का पुढाया वासिता

बपश दे रब्बे मुहम्मद तू मेरी हर एक भता

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

शबे ज़रअत में ईबादत का ज़जबा बढाने, ईस मुकदस रात में पुढ को आतश बाज़ी और दीगर गुनाहों से बयाने नीज़ अपने आप को बा डिरदार मुसल्मान बनाने के लिये तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक, दा'वते ईस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, हर माह कम अज़ कम तीन दिन के लिये आशिकाने रसूल के उमराह "म-दनी काङ्गले" में सुन्नतों भरा सफ़र ईप्तिहार कीजिये और म-दनी ईन्आमात के मुताबिक जिन्दगी गुज़ारने की कोशिश इरमाईये. आप की तरगीब व तहरीस के लिये द्यो म-दनी भडारें पेश की जाती हैं :

﴿1﴾ शबे ज़रअत के इजतिमाअ से मेरा हिल चोट जा गया

मर्कज़ुल औलिया (वाहोर) के अेक ईस्लामी भाई की तहरीर का लुब्बे लुबाब है : तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक, दा'वते ईस्लामी के "म-दनी माहोल" से वाबस्ता डोने से पहले مَعَاذَ اللهِ كَرَّمَ جَلَّتْ جَبْهَتُهُ ज़ियादा तर बह मज़हबों की सोहबत में रहने के बहुत बडे गुनाह के साथ साथ दीगर तरह तरह के गुनाहों की षौइनाक

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ठिक हुआ और उस ने मुज पर दुस्-द शरीफ़ न पढा उस ने जडा की. (عبدالرزاق)

दलदल में ली इंसा हुआ था, सद करोड अइसोस, के शबो रोज़ इल्में डिरामे टेभना, इड्डाशी के अडों के इरे लगाना मेरे नजदीक مَكَادُ اللهِ عَزَّوَجَلَّ काबिले इफ़्र काम था. मेरी गुनाहों लरी जजं रसीदा शाम के इफ़्तिताम और नेकियों लरी सुब्हे बहारां के आगाज के अस्बाब यूं बने के अक इस्लामी लार्थ की इन्फ़िरादी कोशिश की ज-र-कत से मुजे “इन्जर वाल” में शबे बराअत के सिव्सिले में डोने वाले सुन्नतों लरे इजतिमाअ में शिकत की सआदत नसीब डो गइ. मुबल्लिगे दा’वते इस्लामी का बयान इस कदर पुरसोज़ और रिक्त अंगेज था के मैं अपने गुनाहों पर नदामत से पानी पानी डो गया, अल्लाह جَلَّوَجَلَّ की नाराजी का कुछ औसा भौफ़ तारी हुआ के मेरी आंभों से आंसूओं के धारे बड निकले. इजतिमाअ के इफ़्तिताम पर डमारे अलाके के “म-दनी काइला जिम्मेदार” इस्लामी लार्थ ने मुज से मुलाकात इरमाइ और मुजे तीन दिन के म-दनी काइले में सइर की तरगीब दी, यूंके दिल् थोट जा युका था लिहाजा मैं उन की इन्फ़िरादी कोशिश के नतीजे में म-दनी काइले का मुसाइर बन गया. म-दनी काइले के अन्दर आशिकाने रसूल की शक़तों लरी सोडभत में रह कर बे शुमार सुन्नतें सीजने की सआदत डसिल हुइ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ मैं ने अपने साबिका तमाम गुनाहों से तौबा कर ली. जब र-मजानुल मुबारक की तशरीफ़ आ-वरी हुइ तो मैं ने आशिकाने रसूल के साथ आभिरी अ-शरे के अे’तिकाइ की सआदत डसिल की. उस अे’तिकाइ में सत्ताइसवीं शब अक फ़ुश नसीब इस्लामी लार्थ को اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ सरकारे डो आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की जियारत नसीब हुइ, इस बात ने मेरे दिल् में दा’वते इस्लामी की मडभत को मजीद 12 यांढ

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जो मुठ पर रोजे जुमुआ दुर-द शरीफ़ पढेगा में क्रियामत के दिन उस की शफ़ाअत करेगा. (جمع الجوامع)

लगा दिये और मैं मुकम्मल तौर पर दा'वते ईस्लामी के म-दनी माडोल से वाबस्ता हो गया.

आओ करने लगोगे बहुत नैक काम, म-दनी माडोल में कर लो तुम अ'तिकाफ़
 इठले रब से हो दीदारे सुल्ताने दी, म-दनी माडोल में कर लो तुम अ'तिकाफ़
 शादमानी से जूभेगा कल्बे हर्जी,
 म-दनी माडोल में कर लो तुम अ'तिकाफ़

(वसाएले बप्शिश (मुरम्म), स. 645)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿2﴾ इल्मों का प्वार

आबुल मदीना (कराची) के अलाके “अडा बोर्ड” के अक ईस्लामी त्माई के बयान का खुलासा है के पहले पहल में मुआ-शरे का बिगडा हुवा नौ जवान था, रोजाना पाबन्दी के साथ भूख इल्में डिरामे देपने के सबब महल्ले में “इल्मों का प्वार” के नाम से मशहूर हो गया था. मेरी तौबा का सबब येह बना के अक ईस्लामी त्माई की “ईन्डिरादी कोशिश” के नतीजे में “अज्जु ब्राउन्ड” (गुल बहार, आबुल मदीना) में तब्दीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक, दा'वते ईस्लामी की तरफ़ से होने वाले शबे बराअत के सुन्नतों त्बरे ईजतिमाअे पाक में शिकत की सआदत हासिल हो गई, वहां पर मैं ने “कब्र की पहली रात” के मौजूअ पर रुला देने वाला बयान सुना, भौंके फुदा كَلِّمْكَ से दिल् बेयैन हो गया, मैं ने पिछले गुनाहों से तौबा की और दा'वते ईस्लामी के म-दनी माडोल से वाबस्ता हो गया. हमारा सारा घराना मोडर्न था, اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلَيَّ मेरी ईन्डिरादी कोशिश से मेरे पांय त्माई त्मी

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ठिक छुवा और उस ने मुज पर दुरदे पाक न पढा उस ने जन्नत का रास्ता छोड दिया. (طبرانی)

दा'वते ईस्लामी वाले बन गये और सब ने सरो पर ईमामा शरीफ़ का ताज सजा लिया और घर के अन्दर म-दनी माडोल बन गया, ता दमे तहरीर हल्का मुशा-वरत के भादिम की हैसियत से सुन्नतों की पिटमत कर रहा हूँ. मुझे सुन्नतों की तरबियत के म-दनी काइलों में सफ़र का काफ़ी शौक है, اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ हर माह पाबन्दी से तीन दिन आशिकाने रसूल के साथ म-दनी काइले में सफ़र करता हूँ.

यकीनन मुकदर का वोह है सिकन्दर जिसे धेर से मिल गया म-दनी माडोल

यहां सुन्नतें सीपने को मिलेंगी दिवायेगा पौफ़े जुदा म-दनी माडोल

ऐ भीमारे इस्यां तू आ जा यहां पर

गुनाहों की देगा दवा म-दनी माडोल

(वसाएले बफ़िश (मुरम्मम), स. 647, 648)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَى مُحَمَّدٍ

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! बयान को ईप्तिताम की तरफ़ लाते हुये सुन्नत की इज़ीलत और यन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआदत हासिल करता हूँ. ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मुस्तफ़ा जाने रहमत, शम्मे बजमे हिदायत, नोशअे बजमे जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से महबबत की उस ने मुज से महबबत की और जिस ने मुज से महबबत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा. (ابن عَسَاكِرٍ ج ٩ ص ٣٤٣)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आका

जन्नत में पडोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿ १ ﴾ **इरमाने मुस्तक** صَلَّيْنَا عَلَىٰ مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर दुर-दे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुज पर दुर-दे पाक पढना तुम्हारे लिये पाकीजगी का बाईस है. (ابو يعلى)

“शा’जानुल मुयम्मम” के ग्यारह हुरइ की निस्मत से कख्रिस्तान की हाजिरी के 11 म-दनी कुल

- ﴿ 1 ﴾ नबिय्ये करीम, रउिकुर्रहीम صَلَّيْنَا عَلَىٰ مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने अजीम है : मैं ने तुम को जियारते कुभूर से मन्अ किया था, अब तुम कब्रों की जियारत करो के वोड दुन्या में बे रज्जती का सबाब है और आबिरत की याद दिलाती है. (سُنَنِ ابْنِ مَاجَهٗ ٢/٢٠٢ ح ١٠٧١)
- ﴿ 2 ﴾ (वलिय्युल्लाह के मजार शरीफ या) किसी भी मुसल्मान की कब्र की जियारत को जाना याडे तो मुस्तहब येड है के पडले अपने मकान पर (गैरे मकइड वक्त में) दो रकअत नइल पढे, हर रकअत में सू-रतुल इतिहा के बा’द अेक बार आ-यतुल कुर्सी और तीन बार सू-रतुल इश्वास पढे और उस नमाज का सवाब साडिबे कब्र को पडोंयाअे, अद्लाह तआला उस इत शुदा बन्दे की कब्र में नूर पैदा करेगा और ईस (सवाब पडोंयाने वाले) शप्स को बहुत जियादा सवाब अता इरमाअेगा. (فتاوى عالمگیری ج ٥ ص ٣٠٠)
- ﴿ 3 ﴾ मजार शरीफ या कब्र की जियारत के लिये जाते हुअे रास्ते में कुजूल बातों में मशगूल न डो. (أَيْضًا)
- ﴿ 4 ﴾ कख्रिस्तान में उस आम रास्ते से जाअे जहां माजी में कभी भी मुसल्मानों की कब्रें न थीं, जो रास्ता नया बना हुवा डो उस पर न यले. “रहुल मुडतार” में है : (कख्रिस्तान में कब्रें पाट कर) जो नया रास्ता निकाला गया डो उस पर यलना इराम है. (رَدُّ الْمُحْتَارِ ج ١ ص ١١٢)
- बडके नअे रास्ते का सिई गुमाने गालिब डो तब भी उस पर

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुर-द शरीफ़ न पढे तो वोह लोगों में से क-जूस तरीन शप्स है. (مسند احمد)

यलना ना ज़ाईज व गुनाह है. (نَدْرِ مُخْتَار 3 ص 183)

﴿5﴾ कथ मज़ाराते औलिया पर ज़ाईरीन की सडूलत की षातिर मुसल्मानों की कब्रें भिस्मार कर के (या'नी तोड झोड कर) इर्श बना दिया गया है, जैसे इर्श पर लैटना, यलना, षडा होना, तिलावत और जिक्र अजकार के लिये बैठना वगैरा हराम है, दूर ही से इतिहा पढ लीजिये.

﴿2﴾ जियारते कब्र मय्यित के मुवा-जहा में (या'नी येहरे के सामने) षडे हो कर हो और उस (या'नी कब्र वाले) की पाईती (या'नी कदमों) की तरफ़ से ज़ाअे, के उस की निगाह के सामने हो, सिरहाने से न आअे, के उसे सर उठा कर देषना षडे.

(इतावा र-अविथ्या मुषर्रज, जि. 9, स. 532)

﴿7﴾ कब्रिस्तान में ईस तरह षडे हों, के किले की तरफ़ षीठ और कब्र वालों के येहरो की तरफ़ मुंह हो ईस के बा'द कलिये :

السَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا أَهْلَ الْقُبُورِ يَغْفِرُ اللَّهُ لَنَا وَلكُمْ أَنْتُمْ لَنَا سَلَفٌ
तरजमा : अै कब्र वालो ! तुम पर सलाम हो, अद्लाह उमारी और तुम्हारी मग्फ़िरत इरमाअे, तुम हम से पडले आ गअे और हम तुम्हारे बा'द आने वाले हैं. (فتاوى عالمگیری ج 5 ص 300)

﴿8﴾ ज़ो कब्रिस्तान में दाबिल हो कर येह कडे :
اللَّهُمَّ رَبِّ الْأَجَادِ الْبَالِيَةِ وَالْعِظَامِ النَّخْرَةِ الَّتِي خَرَجَتْ مِنَ الدُّنْيَا وَهِيَ بِكَ مُؤْمِنَةٌ
तरजमा : अै ادْخُلْ عَلَيْهَا رَوْحًا مِنْ عِنْدِكَ وَسَلَامًا مِنِّي

﴿۹﴾ **इरमाने मुस्तक** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहां भी हो मुझ पर दूरद पढो के तुमहारा दूरद मुझ तक पडोयता है.
(طبرانی)

अद्लाह ! (औ) गल जाने वाले जिस्मों और बोसीदा लडियों के रब ! जो दुन्या से धिमान की हालत में रुफ्सत हुअे तू उन पर अपनी रहमत और मेरा सलाम पडोया दे. तो लउरते सय्यिदुना आदम (عَلَيْهِ السَّلَام) से ले कर उस वक्त तक जितने मोमिन झैत हुअे सभ उस (या'नी दुआ पढने वाले) के लिये दुआअे मगिदरत करेगे.

(مُصَنَّفُ ابْنِ أَبِي شَيْبَةَ ج ۱۰ ص ۱۵)

﴿9﴾ शईअे मुजरिमान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने शईअत निशान है : जो शफ्स कब्रिस्तान में दाभिल हुवा इर उस ने सू-रतुल इतिहा, सू-रतुल धिप्लास और सू-रतुतकासुर पढी इर येह दुआ मांगी : या अद्लाह ! में ने जो कुए कुरआन पढा उस का सवाब इस कब्रिस्तान के मोमिन मुदों और मोमिन औरतों को पडोया.तो वोह तमाम मोमिन कियामत के रोज उस (या'नी इसाले सवाब करने वाले) के सिइरिशी होंगे. (شَرْحُ الصُّنُورِ ص ۳۱) हदीसे पाक में है : “जो ग्यारह बार सू-रतुल धिप्लास पढ कर इस का सवाब मुदों को पडोयाअे, तो मुदों की गिनती के बराबर उसे (या'नी इसाले सवाब करने वाले को) सवाब मिलेगा.” (دُرَرُ الْمُخْتَارِ ج ۳ ص ۱۸۳)

﴿10﴾ कब्र के डीपर अगरभती न जलाई जाअे इस में सूअे अदब (या'नी बे अ-दबी) और बदइली है हां अगर (हाजिरीन को) भुशू (पडोयाने) के लिये (लगाना याहें तो) कब्र के पास भाली जगह हो वहां लगाअें के भुशू पडोयाना महबूब (या'नी पसन्दीदा) है. (मुलभिसन इतावा र-जविथ्या मुपर्ज, जि. 9, स. 482, 525)

फरमाने मुस्तफ़ा ﷺ: जो लोग अपनी मजलिस से अल्हाड के जिक्र और नबी पर दुःख शरीफ़ पढ़े बिगैर उठ गये तो वोह बद्बुद्दार मुद्दरि से उठे. (شعب الايمان)

आ'ला उजरत رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْه ओक और जगह फरमाते हैं :
 "सहीह मुस्लिम शरीफ़" में उजरते अम्र बिन आस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से भरवी, उन्हों ने दमे मर्ग (या'नी ब वक्ते वफ़ात) अपने फरजन्द से फरमाया : "जब मैं मर जाऊँ तो मेरे साथ न कोई नौडा करने वाली जाये न आग जाये." (مُسْلِمٌ ص 70 حديث 192)

﴿11﴾ कब्र पर यराग या मोमबत्ती वगैरा न रभे, हां रात में राह यलने वालों के लिये रोशनी मकसूद हो, तो कब्र के अेक जनिब जाली जमीन पर मोमबत्ती या यराग रभ सकते हैं.

उजारों सुन्नतें सीपने के लिये मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ दो कुतुब
 (1) 312 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअत डिस्सा 16 और
 (2) 120 सफ़हात की किताब "सुन्नतें और आदाब" उदिय्यतन हासिल कीजिये और पढिये. सुन्नतों की तरबियत का अेक बेहतरीन जरीआ दा'वते ईस्लामी के म-दनी काईलों में आशिकाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है.

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

येह रिसाला पढ लेने के भा'द सवाब की निखत से किसी को दे दीजिये

गमे मदीना, बकीअ, मक्कैरत और बे हिसाब जन्नतुल फिरदौस में आका के पदोस का तालिब



यकुम र-जबुल मुरज्जब 1436 सि.हि.
 21-04-2015

﴿رَبِّهِمْ﴾ : صَلَّ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरूहे पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होगे. (جمع الجوامع)

माخذ و مراجع

مطبوعه	کتاب	مطبوعه	کتاب
فريدک پبلسنگ مرکز الاداب والادب الامم	نزہہ القاری		قرآن مجید
مؤسسۃ الریان بیروت	القول البدیع	دار الفکر بیروت	تفسیر در منثور
دار الکتب العلمیۃ بیروت	فتیۃ الطالبین	دار احیاء التراث العربی بیروت	تفسیر روح البیان
دار الکتب العلمیۃ بیروت	مکافئہ القلوب	دار الکتب العلمیۃ بیروت	صحیح بخاری
مرکز البصیرت برکات رضا الہند	شرح الصدور	دار ابن حزم بیروت	مسلم
دار ابن حزم بیروت	الطائف العارف	دار احیاء التراث العربی بیروت	سنن ابو داؤد
مکتبۃ المنار مکتبۃ المکتبۃ	فضائل الاوقات	دار الفکر بیروت	سنن ترمذی
دار المعرفۃ بیروت	روح البقار	دار الکتب العلمیۃ بیروت	سنن نسائی
دار المعرفۃ بیروت	رد المحتار	دار المعرفۃ بیروت	ابن ماجہ
دار الفکر بیروت	فتاویٰ عالمگیری	دار الفکر بیروت	مسند امام احمد
رضا فاؤنڈیشن مرکز الاداب والادب الامم	فتاویٰ رضویہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت	مسند ابی یوسف
شعبہ برادر مرکز الاداب والادب الامم	فتاویٰ رضویہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت	شعب الایمان
مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	بہار شریعت	دار الفکر بیروت	مصنف ابن ابی شیبہ
کتبہ البراہین کراچی	کلیات مکاتیب رضا	دار الکتب العلمیۃ بیروت	جامع الصغیر
مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	اسلامی زندگی	دار الفکر بیروت	ابن مساکر
مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	وسائل بخشش (مزم)	دار الفکر بیروت	مرقاۃ

येह रिसाला पढ कर दूसरे को हे दीजिये

शादी गमी की तकरीबात, ईजतिमाआत, आ'रास और जुलसे मीलाह वगैरा में मक-क-अतुल मदीना के शाअेअ कर्दा रसाईल और म-दनी इत्नों पर मुश्तमिल पेम्फ्लेट तकसीम कर के सवाब कमाईये, गाडकों को ब नित्यते सवाब तोडके में देने के लिये अपनी दुकानों पर त्मी रसाईल रबने का मा'मूल बनाईये, अफ्बार इरोशों या बर्यों के जरीअे अपने मडल्ले के घरों में डरबे तौफीक रिसाले या म-दनी इत्नों के पेम्फ्लेट डर माड पलोंया कर नेकी की दा'वत की धूमें मयाईये और भूब सवाब कमाईये.

इरमाने मुस्तफ़। صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर दुरद शरीफ़ पढो, अल्वाह उजल तुम पर रडमत भेजेगा. (अबु अदी)

इंडरिस

उन्वान	संख्या	उन्वान	संख्या
आशिके दुइदो सलाम का मकाम	1	ईमामे अडले सुन्नत का पयाम	
आका صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का महीना	2	तमाम मुसल्मानों के नाम	11
शा'बान के पांच दुइद की बडारें	2	पन्दरड शा'बान का रोजा	13
सडलबअे किराम का जजबा	3	इअेदे की बात	14
मौजूदा मुसल्मानों का जजबा	4	सज्ज परया	14
नइल रोजों का पसन्दीदा महीना	4	मगरिब के बाद के छ ⁶ नवाक़िल	15
लोग ईस से गाक़िल हें	5	दुआअे निस्के शा'बानुल मुअज़्जम	16
मरने वालों की इंडरिस		सगे महीना كَفَرَةُ كِي	
बनाने का महीना	5	म-दनी'ईल्तिज़अें	18
आका शा'बान के अकसर रोजे रपते थे	6	साल त्तर ज़दू से डिइजत	19
डदीसे पाक की शई	6	शबे बराअत और क़ब्रों की ज़ियारत	19
दा'वते ईस्लामी में रोजों की बडारें	6	आतश बाजी का मूजिद कौन	20
शा'बान के अकसर रोजे रपना		शबे बराअत की मुरव्वज	
सुन्नत है	7	आतश बाजी डराम है	20
बलाईयों वाली रातें	8	आतश बाजी की ज़ईज सूरतें	21
नाजुक क़ैसले	8	शबे बराअत के ईजतिमाअ से	
ढेरों गुनाडगारों की मग़िदरत		मेरा डिल योट षा गया	22
डोती है मगर...	9	इइल्मों का ष्वार	24
डजरते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की दुआ	9	क़ब्रिस्तान की डज़िरी के	
मडइम लोग	10	11 म-दनी इूल	26

કીમતી લિબાસ મેં નમાઝ

ઈમામે આ'ઝમ અબૂ હનીફા હઝરતે નો'માન બિન સાબિત **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** રાત કી નમાઝ કે લિયે બેશ કીમત કમીસ, શલવાર, ઈમામા ઓર ચાદર પહનતે થે જિસ કી કીમત ડેઠ હઝાર દિરહમ થી, આપ **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** હર રાત નમાઝ ઐસે લિબાસ મેં પઢતે થે ઓર ફરમાતે થે કે જબ હમ લોગોં સે અચ્છે લિબાસ મેં મિલતે હેં તો અલ્લાહ તઆલા સે આ'લા લિબાસ મેં મુલાકાત ક્યૂં ન કરેં.

(તફસિર રૂઝુ'લબિયાન જ ૩ વ ૧૦૬ મલખ્સા)

મક-ત-બતુલ મદીના કી શાખેં

સૂરત : વલિયા ભાઈ મસ્જિદ, ખ્વાજા દાના દરગાહ કે પાસ મો. 9377869225

મોઝસા : ફેઝાને મદીના, બાગે હિદાયત સોસાયટી, કોલેજ રોડ મો. 9725824820

ભરૂચ : ફેઝાને મદીના, મેમણ કોલોની, બુન્યાદ નગર, ડુંગરી શેરપૂરા રોડ મો. 9327522145

બાલાસિનોર : મદીના મસ્જિદ કે સામને, નિસાલ ચોક મો. 9586327091

જામનગર : પાંચ હાટડી મો. 9327977293



મક-ત-બતુલ મદીના®

દા'વતે ઈસ્લામી

ફેઝાને મદીના ત્રી કોનિયા બગીચે કે પાસ, મિરઝાપૂર, અહમદઆબાદ, ગુજરાત, ઇન્ડિયા

Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net